अध्याय – 4
चित्र के माध्यम एवं तकनीक

कला इतिहास की विवेचना से ज्ञात होता है कि कलाकार प्राचीनकाल से विभिन्न माध्यमों द्वारा अपने भावों को अभिव्यक्त करता आ रहा है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक चित्रकार अपने समयानुसार जो माध्यम सहज सुलभ थे उनका प्रयोग करता रहा है। प्रागैतिहासिक काल में गुफाओं में काले रंग से, मध्यकाल की पच्चीकारी और रंगीन कांच के टुकड़े; 15वीं व 16वीं सदी के फ्रेस्कोचित्र, आधुनिक काल के कैनवास, तैलरंग, एक्रिलिक आदि कई नये–नये आविष्कार से कलाकार अपने भावों को इनके द्वारा व्यक्त करता चला आ रहा है। कलाकार को अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिये माध्यम की आवश्यकता होती है। एक संगीतकार को स्वरों की, लेखक या कवि को शब्दों की, उसी प्रकार एक चित्रकार को कागज, तूलिका, रंग आदि की आवश्यकता होती है। इन माध्यमों के प्रयोग का ज्ञान होना भी आवश्यक है। माध्यमों के प्रयोग करने के तरीके को ही तकनीक या रचना कौशल कहा जाता है।

विविध माध्यमों का भी अपना स्वाभाविक व्यवहार एवं प्रकृति होती है, उसे भी कलाकार को समझना आवश्यक है। कोई भी कल्पना तब तक कलाकृति का रूप नहीं ले सकती है जब तक कलाकार को कला माध्यमों एवं उनको किस प्रकार प्रयुक्त करना है, का ज्ञान न हो। माध्यम की इच्छा को ध्यान में रखना ही रचना कौशल का रहस्य है। रचना कौशल माध्यम की इच्छा को अपनी इच्छा के अनुकूल बनाकर उसके समायोजन करने में निहित होता है। सफल कला सृजन माध्यमों एवं विधियों की विधिवत शिक्षा द्वारा ही संभव है अन्यथा कलाकार अपने भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ होगा। विविध माध्यमों व तकनीक का अध्ययन इस अध्याय में किया जा रहा है ताकि विद्यार्थी प्रयोग व अनुभव से सृजन कर सकें तथा जान सकें कि एक माध्यम का दूसरे माध्यम में किस तरह मिश्रण कर नये प्रयोग कर सकते हैं।

जल रंग

जल रंग का प्रयोग मुख्यतः कागज पर ही किया जाता है। हाथ से बना कागज जलरंग चित्रण के लिए उपयुक्त रहता है। जलरंग चित्रण के लिये ऐसे कागज की आवश्यकता होती है जो रंग को फैलने न दे, पानी को सहन कर सके। कागज पर चित्रण करने से पहले कागज को गीला करके किनारों पर गोंद या टेप द्वारा बोर्ड की सतह पर चिपका दिया जाता है फिर उस पर रंग लगाना उचित रहता है ताकि रंग फैल न सके। इस तरह कागज लगाने से कागज खिंच जाता है और रंग लगाने पर ऊंचा–नीचा भी नहीं होता। विभिन्न बनावट की सतह वाले कागजों पर भिन्न प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। जलरंगों को पानी में घोलकर पतला लगाया जाता है

नन्दलालबोस, हरीशचन्द्र, जल रंग

जिससे रंगों में पारदर्शी प्रभाव व ताजगी रहती है। श्वेत व काले रंग का प्रयोग इसमें नहीं करना चाहिये। जलरंग चित्रण के लिये सेबल के बालों की तूलिका उपयुक्त रहती है। तूलिका गोल, चपटी तथा विभिन्न मोटाई की मिलती है। बारीक काम के लिये गोल व बड़े स्थानों हेतु चपटी तूलिका का प्रयोग करना चाहिये। जलरंग की शुद्धता का भी ध्यान रखना चाहिये। समय–समय पर पानी गंदा हो जाने पर बदलते रहना चाहिये।

जामिनी राय, तीन पुजारिनें, टैम्परा

टेम्परा

जलरंग की तरह इसका संवाहक भी जल है। इसमें अपारदर्शीय रंगतों का प्रयोग किया जाता है। इसकी मुख्य विशेषता इसका पायस है। ये पायस गोंद, सरेस, अण्डे की जर्दी, शहद, मोम, दूध आदि पदार्थ है जिसे रंगों में मिलाया जाता है, जिससे रंगों में अपारदर्शिता रहती है। इस विधि में चित्रांकन करने में सुविधा रहती है। इसमें रंगतों द्वारा विभिन्न प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। इसे तैयार करने में खड़िया पाउडर का प्रयोग किया जाता है। जो आजकल पोस्टर रंगों के रुप में बाजार में उपलब्ध रहता है। 15वीं शती के यूरोप के चित्रकारों का प्रिय माध्यम टेम्परा था जिसमें अण्डे की जर्दी को मिलाया जाता था। अण्डे में से जर्दी वाला भाग सफेद भाग में से सावधानी पूर्वक अलग किया जाता है। फिर उसे जलरंग के लिये प्रयुक्त होने वाले पाउडर में मिलाकर पेस्ट के रुप में बना लेते हैं और पानी को संवाहक के रुप में प्रयोग करके चित्र पर लगाया जाता है। इसे सूखी दीवार पर या कागज पर रेखांकन करने के बाद तूलिका की सहायता से लगाया जाता है। सूखने पर एक हल्की चमकदार झिल्ली बन जाती है। इससे चित्र में अपारदर्शिता आती है और चित्र को सुरक्षा भी देती है।

अन्य विधि से गोंद का पायस मिलाकर तैयार किया जाता है। रंग के पाउडर में गोंद या सरेस मिलाते हैं। चित्र धरातल खुरदरी दीवार, लकड़ी का बोर्ड, कागज आदि होता है जिस पर यह तैयार लेप लगा देते हैं। सूखने के बाद दूसरे रंग को उसी के ऊपर लगाकर नवीन प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं।

नन्दलाल बोस, बुद्ध का कपिल वस्तु में आगमन–वाश और टैम्परा

वाश –

वाश चित्र की तकनीक बंगाल स्कूल की देन है। अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने जापानी कला से प्रेरणा लेकर वाश टैकनीक अपनाई। इसका सवांहक जल ही है। इस माध्यम में धरातल हेतु अंग्रेजी व्हाटमैन कागज का प्रयोग किया जाता था। श्वेत कार्ट्रेज पेपर पर भी इसका प्रयोग किया जाता है। चित्रकार चित्र बनाने के लिये सर्वप्रथम चित्र की आकृतियों को लाल रंग की रेखाओं से अंकित करता है। फिर चित्र को पानी में भिगोकर समतल बोर्ड पर सुखाकर चित्र की सीमा रेखाओं को स्थायी कर लेता है। इसके पश्चात् चित्र के विभिन्न भागों में रंग भर दिया जाता है। कागज को पुनः पानी में भिगोकर सपाट पट पर सुखाकर चित्र के रंगों को स्थायी किया जाता है जिससे कि ऊपर से रंग की सपाट वाश

लगाने पर यह रंग कागज से न छूट जाये। इस क्रिया के पश्चात् वातावरण उत्पन्न करने के लिये एक या अनेक रंगों को सम्पूर्ण चित्र के ऊपर पारदर्शी ढंग से बहा दिया जाता है, या वाश लगादी जाती है। इससे सम्पूर्ण चित्र में चिकनापन, धुंधलापन और रंग का एक सा सपाट प्रभाव आ जाता है। इससे चित्र में ग्रे प्रभाव आ जाता है। इसके पश्चात् चित्र की आकृतियों को उभारने के लिये रेखांकन को पुनः कत्थई या किसी अन्य रंग से उभार दिया जाता है। साधारणतया चित्र के निर्बल या कमजोर भाग को वाश के प्रभाव से छुपा दिया जाता है। आकृतियों में डौल लाने के लिये छाया तथा प्रकाश का भी आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाता है।

तैल रंग –

तैल माध्यम स्थायी है। इस पर पानी का प्रभाव नहीं पड़ता। इसमें छाया प्रकाश को स्वाभाविक व प्रभावशाली ढंग से बनाया जा सकता है। इसमें टैक्सचर देने में सरलता रहती है। चौड़े–चौड़े तूलिकाघातों का प्रयोग कर सकते हैं। साधारणतया चित्रण तीन विलेप (कोट्स) में होता है। पहले लेप में छाया, दूसरे में मान व तीसरे लेप में प्रकाश दिखाने के लिये होता है। कलाकार अपने अनुभवों से कुछ हेर–फेर भी कर लेता है। तैल रंग में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहियेः–

धरातल – तैलचित्रण के लिये विभिन्न प्रकार के धरातलों का प्रयोग होता है जैसे कैनवास, कागज, हार्डबोर्ड, काष्ठफलक, कैनवास बोर्ड आदि। तैलचित्रण के लिये कैनवास सबसे सुविधाजनक व अच्छा आधार होता है। कैनवास अच्छे मजबूत धागे द्वारा बुनकर तैयार किये श्रेष्ठ कपड़े का होता है। कैनवास को लकड़ी के फ्रेम में खींचकर कीलों से तान दिया जाता है। कैनवास बोर्ड एक प्रकार से कैनवास ही है जिसे लकड़ी के बोर्ड पर चिपका दिया जाता है। यह अभ्यास करने के लिये उपयुक्त रहता है। अभ्यास करने के लिये कागज भी उपयुक्त रहता है। कागज को कैनवास की तरह दाने उठाकर बनाया जाता है। हार्डबोर्ड भी कई प्रकार के मिलते हैं – सपाट सतह वाले व बुनावट वाले। कलाकार अपनी पसंदानुसार चयन कर सकता है। काष्ठफलक पर भी चित्रण कर सकते हैं। चित्रण करने से पूर्व इनका धरातल कैनवास की तरह ही तैयार करना होता है।

कैनवास तैयार करने की विधि – कैनवास तैयार करने के लिये सर्वप्रथम कपड़े को लकड़ी के फ्रेम पर खींचकर कीलों या स्टैपल्स की सहायता से तान दिया जाता है। फिर उस पर सरेस या फेविकोल का घोल को पानी से पतला कर उस पर ब्रुश से लगा देते हैं ताकि कपड़े के छिद्र बंद हो जाये। इस प्रक्रिया को साइजिंग कहते हैं। इसके उपरांत प्राइमिंग की जाती है। कैनवास पर सफेदा (जिंक, टिटेनियम या लैड आक्साइड) तारपीन या अलसी के तेल का मिश्रण तैयार करके चौड़े ब्रुश से लगाया जाता है। इस सफेदे के स्थान पर कैसीन रंग या सफेद प्लास्टिक इमल्शन पेंट का भी प्रयोग किया जाता है।

तूलिका – तैलचित्रण के लिये सफेद बालों वाली चपटी तूलिका उपयुक्त रहती है। इन्हें फ्लैट ब्रुश भी कहा जाता है। कुछ फ्लैट ब्रुश किनारे से गोलाई लिये रहते हैं जिन्हें फिल्बर्ट कहा जाता है। कोमल रंग मिश्रण व रेखा के लिये उचित रहता है। गोल ब्रुश को भी बारीक काम के लिये प्रयोग करते हैं। चित्रण हेतू पेंटिंग नाइफ व पैलेट नाइफ को भी चौड़े घातों हेतु उपयोग किया जाता है। तैल चित्रण के पश्चात् तूलिका को अच्छे से कपड़े से साफ कर गुनगुने पानी व साबुन से धो लेनी चाहिये, जब तक रंग नहीं निकल जाये।

माध्यम – तैलचित्रण के लिये शुद्ध अलसी का तेल, शुद्ध तारपीन का तेल व वार्निश माध्यम हेतु प्रयोग करते हैं। अलसी का तेल व तारपीन का तेल कलाकार अपनी रूचिनुसार व अनुभव से कम अधिक मिला सकता है। विद्यार्थियों के लिये समभाग उचित रहता है। वार्निश का प्रयोग चित्र के सूखने के उपरांत

कर सकते हैं। इससे चित्र में चमक आ जाती है। कोपल वार्निश उपयुक्त रहती है। इसके अतिरिक्त रंग रखने के हेतु पैलेट, तेल रखने के लिये डिपर व कैनवास या कोई भी धरातल को रखने हेतु ईजल का प्रयोग किया जाता है।

एक्रेलिक

सन् 1950 के पश्चात् ही एक्रेलिक माध्यम विकसित व परिष्कृत हो स्थायी चित्रण माध्यम के रूप में आया है और काफी प्रचलित हो गया। एक्रेलिक रंगों में कई विशेषताएं हैं। इसे जलरंग माध्यम की तरह पतले वाश के रूप में और तैल रंग की तरह मोटे–मोटे घातों में काम कर सकते हैं। एक्रिलिक रंग तैल रंग की अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली है। इनमें समय के साथ पीलापन नहीं आता, न चटकते हैं, तैल रंग से अधिक सरल हैं। रंग शीघ्र सूखता है जिसके कारण दूसरी सतह शीध्र लगा सकते हैं। इसे पारदर्शी व अपारदर्शी दोनों ढंग से व कई तरह के पोत बनाते हुये प्रयोग कर सकते हैं। विभिन्न प्रभाव डालने के लिये इसमें मीडियम का प्रयोग भी कर सकते हैं। चमक लाने के लिये गलोस मीडियम व मैट मीडियम चमक रहित व पारदर्शी प्रभाव के लिये प्रयोग करते हैं।

सतीश गुजराल, खिलाड़ी एक्रिलिक

पेस्टल

पेस्टल रंगों का प्रयोग 15वीं शती के आरम्भ से और 16वीं शती में दिखाई देने लगा था। कई कलाकारों ने इसका प्रयोग किया परन्तु सबसे सफल रूप में 20वीं शती के यूरोपीय कलाकार एडगर देगा रहे जिन्होंने इस माध्यम को अन्य माध्यमों के मिश्रण से नये प्रभाव उत्पन्न किये। पेस्टल रंगों की मुख्य विशेषता इसका धूमिल प्रभाव है। पेस्टल रंग भी चित्रण का एक माध्यम है जो चित्रण के साथ रेखांकन के लिये भी प्रयुक्त किया जाता है। इसे रंग के पाऊडर में गोंद मिलाकर तैयार किया जाता है। फिर अंगुली के आकार की बत्तियां बना ली जाती हैं। जरा सा तिरछा कर, घुमाकर, नोक से या एक तरफ से कागज पर घिसकर विभिन्न प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। चित्र में पूर्णता, जटिल अध्ययन व त्वरित प्रभाव हेतु समान रुप से उपयुक्त है।

पेस्टल चित्र

साधारण या सूखे पेस्टल के अतिरिक्त ऑयल पेस्टल का भी प्रयोग किया जाता है। ऑयल पेस्टल में रंग वाले पाउडर में हाइड्रोकार्बन मोम और पशु की वसा का मिश्रण किया जाता है। इससे विभिन्न प्रभाव दिखाये जा सकते हैं। एक वर्ण के ऊपर दूसरे की रंगत लगाकर, कोमल छाया, अंगुली से रंगों को घिसकर नवीन रुप ला सकते हैं। जलरंग या एक्रेलिक रंग को मिलाकर भी नये प्रभाव दिखा सकते हैं। तारपीन का तेल या स्पिरिट को भी रंगों के ऊपर से लगाकर प्रयोग कर सकते हैं। तैल पेस्टल साधारण पेस्टल रंगों की अपेक्षा अधिक स्थायी है।

पेस्टल चित्रों का स्थायीकरण – साधारण पेस्टल रंग के चित्रण को उचित तरीके से सुरक्षित व स्थायीकरण करना चाहिये नहीं तो रंग झड़ने लगते हैं। बाजार में स्थायीकरण हेतु कई फिक्सेटिव मिलते हैं जिन्हें लाख, सुन्द रस आदि को अल्कोहल में मिलाकर तैयार किया जाता है। इस घोल को चित्र पर स्प्रे कर दिया जाता है। वैसे किसी भी तरह का फिक्सेटिव का प्रयोग करने से रंगों में कुछ परिवर्तन संभव है। पेस्टल चित्र को उचित तरीके से माऊण्ट कर फ्रेम किया जाये तो इसे स्थायित्व प्रदान कर सकते हैं। फ्रेम के कांच और पेस्टल चित्र के बीच थोड़ा सा स्थान छोड़ना चाहिये।

कोलाज – प्रत्यक्ष वस्तुओं को चित्र धरातल पर चिपका कर बनायी गई कलाकृति कोलाज कहलाती है। ये वस्तुएं पारम्परिक माध्यमों से हटकर कुछ भी हो सकती है जैसे लकड़ी, कतरन, टिन के टुकडे, रस्सी, सूतली, पिन, रेत, ट्यूब आदि। इसका सर्व प्रथम प्रयोग घनवाद में दिखाई देता है। घनवाद के कलाकार मुख्य रूप से ब्राक और पिकासो ने इस पद्धति का प्रयोग किया। घनवादी चित्रकारों ने कपड़ा, दीवार, कागज समाचार–पत्र, बेंत की जाली, माचिस आदि वस्तुओं के टुकड़ों को चित्रभूमि पर चिपका कर ऊपर से सांकेतिक रेखाओं व रंगों की सहायता से चित्र रचनाएं बनाई। परम्परागत पद्धति से वस्तु का हूबहू चित्रण की बजाय उसका सूचक रूप से उल्लेख किया। इस पद्धति को कलात्मक महत्त्व प्राप्त हुआ। चित्रण की तकनीक से कला सृजनता में नयी संभावनाएं व आयाम उपस्थित कर सकते हैं।

जां ग्री – कोलाज

भित्तिचित्रण

भित्तिचित्र या फ्रेस्को पेंटिंग दीवारों पर की गई चित्रकारी को कहते हैं। भारतीय चित्रकला का इतिहास भित्ति चित्रकला से आरम्भ होता है। अजंता–एलोरा की गुफाओं, किलों, कई सार्वजनिक व निजी भवनों में भित्ति चित्रकला दिखाई देती है। सभ्यता के विकास के साथ चित्रण विधि में भी परिपक्वता आती गई। भित्ति चित्रण की तकनीक में भी प्रगति होती गई। इस पद्धति में गेरू, खड़िया, रामरज, हिरमिच, काजल, लाजवर्द आदि खनिज रंगों का प्रयोग हुआ।

भित्ति चित्रण में दो पद्धतियां प्रचलित हैं – (1) आलागीला पद्धति व (2) सूखी पद्धति। ताजी पलास्तर की हुई भित्ति पर चित्रण कार्य आलागीला पद्धति है। इस पद्धति में दीवार बनाते समय ही चूने बालू या संगमरमर के चूर्ण का मोटा लेप लगा दिया जाता है। लेप के जम जाने व सूखने से पूर्व ही नम पलास्तर

पर खनिज रंगों को इस प्रकार लगाया जाता है कि रंग और धरातल एक हो जाते हैं। इस तरह की दो पद्धतियां प्रचलित हैं एक इतालवी और दूसरी जयपुरी पद्धति। इतालवी पद्धति में गीले चूने में दो भाग बालू मिलाकर भित्ति पर पलास्तर चढ़ाते हैं। गीली सतह पर ही नुकीली लकड़ी या धातु से रेखांकन कर लेते हैं। खाका को भित्ति पर रखकर गेरू पाउडर को मलमल के कपड़े में डालकर उस पर दबाकर रेखांकन बना लेते हैं। ग्रिड की सहायता से मुक्तहस्त से रेखांकन कर सकते हैं। फिर केवल खनिज रंगों का ही चित्रण में प्रयोग करना चाहिये। गीले पलास्तर में लगाये जाने के कारण रंग पलास्तर द्वारा शोषित होकर गहरे पैठ जाते हैं और प्लास्तर का एक अविभाज्य अंग बन जाते हैं। जयपुर की भित्तिचित्रण पद्धति भी इसीप्रकार की है। प्रचलित नाम अरायश तथा मोराकशी है। गीली सतह पर रंग लगाने के बाद उस पर अकीक पत्थर या ओपनी से धरातल की घिसाई कर उसमें चमक लाई जाती है।

भित्तिचित्रण – अंगडाई,
बाफना हवेली, उदयपुर

सूखी पद्धति में भित्ति को उपरोक्त विधि से ही तैयार करके उसके पूर्ण रूप से सूखने के बाद चित्रण किया हुआ कार्य सूखी पद्धति की श्रेणी में आता है। इसमें रंगों के माध्यम हेतु गोंद, सरेस व अंडे की जर्दी का प्रयोग किया जाता है।

म्यूरल

भित्ति चित्रण तकनीक में भित्ति को तैयार करके उस पर चित्रण किया जाता है। मिश्र के कलाकार व पुनर्जागरण काल में यूरोपीय कलाकारों ने इस परम्परागत तकनीक के स्थान पर किसी भी माध्यम से चित्रण कर भित्ति को सजाया इसी को म्यूरल की संज्ञा दी गई है। आधुनिक समय में भी कलाकार विभिन्न माध्यमों को प्रयोग कर सार्वजनिक भवनों या निजी भवनों को अलंकृत कर रहा है। इसमें मोजाइक, लकड़ी, सीमेन्ट, एक्रिलिक, स्टील फाईबर ग्लास, टेराकोटा, विभिन्न वस्तुओं आदि का प्रयोग कर म्यूरल को कलात्मक सृजन का रूप दे रहे हैं। इसमें इसकी सुरक्षा व बचाव का पूरा ध्यान रखना चाहिये ताकि धूप, सर्दी, बरसात में खराब न होने पाये।

मणिकुट्टिम

यह माध्यम पांचवीं तथा छठी शताब्दी की ईसाई कला से देखने में आता है। आरम्भ में केवल भवनों के फर्श तथा फव्वारों आदि पर विशेष रूप से मिलता है। भित्ति चित्रों में भी इस पद्धति का प्रयोग होने लगा था। चर्च, समाधिगृहों, दीवारों और मेहराबों पर भी इसके प्रयोग कालांतर में होने लगे थे। इस कार्य हेतु रंगीन कांच के चौकोर टुकड़ों का प्रयोग होता है जिन्हें पलस्तर की हुई दीवार पर चिपका देते थे। रंगीन कांच के टुकड़े सुनहरे, लाल, नीले, हरे आदि होते थे जिनसे भवनों की आन्तरिक प्रकाश में भी परिवर्तन हो जाता था। पलस्तर सूखने के साथ ही दीवार में जम जाते थे। आज भी जनसाधारण अपने भवनों को अलंकृत करने हेतु इनको स्थान देते हैं।

मिक्स मीडिया

दो या अधिक चित्रण माध्यमों को मिश्रित कर नवीन रूप में अभिव्यक्त करना ही मिक्स मीडिया या मिश्रित माध्यम कहलाता है जैसे जल रंग के साथ पोस्टर रंग एक्रिलिक रंग के साथ तैल रंग, पेस्टल रंगों के साथ पोस्टर या तैल रंग का प्रयोग करना। छापा चित्रण के विविध पद्धतियों को भी मिश्रित कर नये माध्यम में सृजन मिश्रित माध्यम है। इस तरह के प्रयोगों द्वारा कलाकार अपनी सृजनात्मकता से नयी संभावनाओं की वृद्धि करता है।

छापा चित्रण –

जिस प्रकार कलाकार अपने भावों की अभिव्यक्ति हेतु चित्र या मूर्ति का सृजन करता है उसी प्रकार छापा चित्रण भी कलाकार की भावाभिव्यक्ति का माध्यम बन गई है। छापा पद्धति की विभिन्न तकनीक के साथ कलाकार ने अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति को छापाचित्रण से प्रकट किया है।

1450 ई. में गुटनवर्ग के छापा मशीन के आविष्कार से प्रिंटिंग तकनीक का द्रुत गति से विकास हुआ था। 14वीं शती में यूरोप के कलाकार ड्यूरर ने छापाचित्रण को कलाकृति के रूप में प्रयोग किया था। बीसवीं शती तक आते–आते कलाकारों ने छापाचित्रण को स्वतंत्र माध्यम के रूपमें अपना लिया। विभिन्न तकनीक के विकास से छापाचित्रण ने कई संभावनाओं को बढाया। पूर्व में मिश्र, भारत और अरब देशों में छापाचित्रण केवल टैक्सटाईल या मुहर चित्रण हेतु ही व्यावसायिक रूपमें प्रयोग होता था। अब ये व्यावसायिक छापा न होकर कलासृजन का माध्यम हो गया। छापाचित्रण की कई विधियां हैः–

लीनों का छापा चित्र

रिलीफ प्रिंटिंग – रिलीफ प्रिंटिंग सबसे पुरानी तकनीक है। इसमें जो क्षेत्र छापा के लिये नहीं चाहिये उसे टूल्स की सहायता से निकाल दिया जाता है। उभरे हुये भाग पर रोलर से स्याही लगा कर उस ब्लॉक या प्लेट का प्रिंटिंग मशीन परदाब देकर छापा ले लिया जाता है। इसकी प्रचलित तकनीकों में लिनोकट, वुडकट, धातु आदि हैं। लीनोकट हेतु सादा लिनोनियम शीट का प्रयोग होता है जो लचीलापन लिये होती है। वुडकट के लिये अधिकतर प्लैंकवुड का धरातल के रूप में प्रयोग होता है। लिनोकट व वुडकट की धरातल पर काम करने के लिये विभिन्न प्रकार के टूल्स बाजार में उपलब्ध हैं। इन टूल्स की सहायता से धरातल को उत्कीर्ण कर लिया जाता है। एक वर्ण से अधिक वर्ण के उपयोग के लिये उतनी ही प्लेट्स

कृष्णा रेड्डी, पेस्टोरल, एचिंग तथा एनग्रेविंग

तैयार की जाती है, जितने वर्ण चाहिये।

इन्टैगलियो – इन्टैगलियो शब्द इतालवी भाषा का है जिसका अर्थ है एन्ग्रेव करना या काटना। इसमें धातु की प्लेट पर रेखाएं या टोन्स को उत्कीर्ण किया जाता है। प्लेट में स्याही लगाकर उसे साफ कर दिया जाता है। स्याही कटे हुये स्थान पर भर दी जाती है। नम कागज को प्लेट पर रखकर ऐचिंग प्रेस के रोलर्स से दाब देकर छापा निकाल लिया जाता है। रोलर के दाब से कागज कटे हुये भाग पर जोर लगता है जिसमें से स्याही कागज ले लेता है और प्लेट का कागज पर छापा आ जाता है।

इसमें कई तकनीकों से काम कर सकते हैं कुछ निम्न हैं:–

(1) मैजोटिंट

(2) ड्राय पाइंट

(3) एचिंग

(4) एक्वाटिंट आदि।

इन विधियों के अतिरिक्त लिथोग्राफी सिल्क स्क्रीन, कोलोग्राफ आदि हैं। इन विधियों को मिश्रित करके भी कला सृजन कर सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. कलाकार चित्र रचना कर अपने भावों को अभिव्यक्त करता है वे माध्यम हैं – जलरंग, टैम्परा, तैल रंग आदि।
2. माध्यमों के प्रयोग करने के तरीके को तकनीक या रचना कौशल कहा जाता है।
3. जलरंग हेतु हाथ से बना कागज उपयुक्त रहता है। जलरंग चित्रण में पारदर्शी प्रभाव रहता है।
4. टेम्परा में रंगों में पायस मिलाया जाता है। जिसके कारण अपारदर्शी प्रभाव आता है।
5. वाश टैक्नीक में व्हाटमैन पेपर का प्रयोग करते हैं।
6. एक्रेलिक रंग को जलरंग माध्यम की तरह पतले वाश के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं और तैल रंग माध्यम के समान मोटे–मोटे घात लगा कर भी।
7. पेस्टल रंगों की मुख्य विशेषता इसका धूमिल प्रभाव है। इसे रेखांकन व चित्रांकन दोनों रूप में काम में लिया जा सकता है।
8. कोलाज में प्रत्यक्ष वस्तुओं को चित्र धरातल पर चिपका कर बनायी गई कलाकृति है।
9. दीवारों पर की गई चित्रकारी भित्ति चित्रण है। मुख्य रूप से दो पद्धतियां प्रचलित हैं – आला गीला पद्धति और सूखी पद्धति।
10. मोजाइक माध्यम में रंगीन कांच के टुकड़ों को प्लास्तर की हुई दीवार पर चिपका देते हैं।
11. दो या इससे अधिक चित्रण माध्यमों का मिश्रण कर बनाई गई रचना को मिक्स मीडिया या मिश्रित माध्यम कहा जाता है।
12. छापा चित्रण में छापा मशीन की सहायता से छापा बनाकर कलाकृति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। छापाचित्रण की कई विधियां हैं – लीनोकट, वुडकट, एचिंग, लीथोग्राफी, सिल्क स्क्रीन, कोलोग्राफ आदि। इन विधियों को मिश्रित कर भी कलासृजन करते हैं।
13. तैल चित्रण माध्यम स्थायी है। इस पर पानी का प्रभाव नहीं पड़ता। इसमें चौड़े–चौड़े तूलिकाघातों व विभिन्न टैक्सचर को प्रभावशाली ढंग से बना सकते हैं।

अभ्यासार्थ

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. जलरंग चित्रण के लिये किसके बालों की तूलिका उपयुक्त रहती है?
2. जलरंग चित्रण के लिये कैसा कागज प्रयोग में लेना चाहिये?
3. आजकल टैम्परा रंग किस रूप में बाजार में मिलते हैं?
4. टैम्परा की मुख्य विशेषता क्या है?
5. भारत में वाश टैक्नीक किसने आरम्भ की?
6. वाश टैक्नीक के लिये कौन सा कागज उपयुक्त है?
7. एक्रिलिक रंग में कौन सा मीडियम चमक लाने के लिये प्रयोग करते हैं?
8. एक्रिलिक रंग में कौन सा मीडिया चमक रहित चित्रण के लिये उपयुक्त रहता है?
9. पेस्टल रंग की मुख्य विशेषता क्या है?
10. पेस्टल रंग के स्थायीकरण हेतु किसका प्रयोग करते हैं?
11. कोलाज पद्धति कहां से शुरू हुई?
12. भित्ति चित्रण की कौन–सी दो प्रचलित पद्धतियां हैं?
13. भित्तिचित्रण में कौन से रंग प्रयोग में लाये जाते हैं?
14. जयपुर की आलागीला पद्धति में धरातल की घिसाई के लिये किस का प्रयोग किया जाता है?
15. मणिकुट्टिम या मोजाइक में किस वस्तु का प्रयोग किया जाता है?
16. यूरोप के किस कलाकार ने सर्वप्रथम छापा चित्रण को कलाकृति के रूपमें प्रस्तुत किया?
17. रिलीफ प्रिंटिंग की किन्हीं दो प्रचलित तकनीक का नाम लिखें?
18. इन्टैगिलियो पद्धति में किस प्लेट का प्रयोग किया जाता है?
19. लीनोकट या वुडकट में काम आने वाले टूल्स कौनसे हैं?
20. माध्यमों के प्रयोग करने के ज्ञान को क्या कहते हैं?
21. तैलचित्रण में कौन सी तूलिका का प्रयोग होता है।
22. कोलाज क्या है?
23. म्यूरल से आप क्या समझते हैं?
24. मिक्स मीडिया के बारे में क्या जानते हैं? लिखें।
25. मोजाइक माध्यम द्वारा चित्रण क्या है?
26. टैम्परा टेक्नीक से आप क्या समझते हैं?
27. रिलीफ प्रिंटिंग तकनीक क्या है?
28. पेस्टल रंग के स्थायीकरण हेतु क्या करना चाहिये।
29. आला गीला पद्धति क्या है?
30. इन्टैगलियो पद्धति के विषय में आप क्या जानते हैं?
31. एक्रिलिक के बारे में लिखें।
32. जलरंग माध्यम संक्षेप में लिखें।

33. भित्ति चित्रण की सूखी पद्धति से क्या समझते हैं?
34. वाश तकनीक को अपने शब्दों में समझाइये।
35. तकनीक या रचना कौशल क्या है?
36. माध्यम से आप क्या समझते हैं?
37. कैनवास तैयार करने की विधि लिखें।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. चित्र में माध्यम व तकनीक पर एक निबन्ध लिखें।
2. जलरंग व टैम्परा रंग माध्यम का तुलनात्मक अध्ययन करें।
3. भित्ति चित्रण क्या है? इसके बारे में विस्तार से लिखें।
4. छापा चित्रण क्या है? व्याख्या करें।
5. पेस्टल रंग पर विवेचना कीजिये।
6. 'वाश' टैक्नीक के बारे में लिखें।
7. तैल चित्रण माध्यम पर विस्तार से लिखें।